GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
( ISSN – 2582-8770 )
Globally peer-reviewed and open access journal.

# प्राथमिक शिक्षा में पुस्तकालय का दायित्व एवं भूमिका

## सुनील कुमार साहू

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग,
शासकीय राम भजन राय एन. ई. एस. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जशपुर नगर (छ.ग.)
पता :- ( ग्राम + पोस्ट – देवनगर, जिला – सूरजपुर, राज्य – छत्तीसगढ़, 497333)

**शोध सार**

*प्राथमिक शिक्षा, यह वह समय होता हैं, जब बालक अपने पूर्व ज्ञान को नविन ज्ञान से जोड़ने विद्यालय आता हैं, और विद्यालय पुस्तकालय का यह दायित्व बनता हैं वह बालकों के इन पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ने का पर्याप्त अवसर मुहैया करवाए जिससे इन बालकों का सर्वांगीण विकास हो सके। बच्चों के विकास ध्यान में रख कर पुस्तकालय एक ऐसे वातावरण का निर्माण करे जिससे बालक खेल-खेल में सब कुछ सीखे और पुस्तकों से प्रेम करें। विद्यालय पुस्तकालय विद्यार्थियों में स्व-अध्ययन की आदतों का निर्माण करता हैं, साथ ही साथ इन विद्यार्थियों में पुस्तक पढ़ने, रचनात्मकता, भाषा अर्जन जैसे अनेकों क्रियाकलाप में सहयोग करता हैं।*

***बीज शब्द :*** *पुस्तक, पुस्तकालय, प्राथमिक शिक्षा, बाल पुस्तकालय, विद्यालय पुस्तकालय।*

## प्रस्तावना

अनौपचारिक रूप से बालक अपने घर से ही शिक्षा ग्रहण करना प्रारंभ करता हैं, वहां वो नन्हा बालक अपने माता-पिता और समाज से बहुत कुछ सीखता हैं। बालक का समाजीकरण करने में माता-पिता एवं समाज के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान विद्यालय का होता हैं। ज्ञान अर्जन का मुख्य आधार भाषा होता हैं, जिसे बालक अपने घर से ही सिख कर विद्यालय में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने आता हैं, और यहीं से उसका आरंभिक शिक्षा प्रारंभ होता हैं। पुस्तकालय किसी भी शिक्षण संस्था का ह्रदय होता हैं, जो अपने पाठकों की सेवा करने को तत्पर होती हैं। विद्यालय का पुस्तकालय ठीक उसी तरह कार्य करता हैं जिस प्रकार से एक वैज्ञानिक का प्रयोगशाला। पुस्तकालय, विद्यालय के उद्धेश्य को पूरा करने का प्रयास करता हैं एवं बालक की शैक्षणिक आवश्यकता को पूर्ण करने में सहयोग करता हैं। पुस्तकालय मात्र एक पुस्तकों का घर नहीं होता बल्कि यह एक सामाजिक संस्था होती हैं, जिसका अपने पाठक के प्रति विभिन्न दायित्व होते हैं, जिनसे उनका पाठक समाज में एक नया पहचान बना सके। इस आलेख में हम पुस्तकालय के इन्ही दायित्वों एवं भूमिकाओं का अध्ययन करेंगे।

**विद्यालय पुस्तकालय : परिचयात्मक वर्णन**

नाम से ही स्पष्ट हो जाता हैं की किसी विद्यालय में स्थित पुस्तकालय को विद्यालय पुस्तकालय कहाँ जाता हैं, जो विद्यालय की आवश्यकता एवं उद्धेश्यों के आधार पर कार्य करता
हैं। विद्यालय में स्थित यह पुस्तकालय अपने पाठकों के सभी शैक्षणिक गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं जिससे उनका सकारात्मक विकास हो सके। विद्यालय पुस्तकालय की भी अपनी अध्ययन स्तर के आधार पर तीन प्रकार होती है जो प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के होते हैं। प्राथमिक स्तर के पुस्तकालयों को बाल पुस्तकालय की भी संज्ञा दी जाती हैं जिसे बालकों का पुस्तकालय कहा जाता हैं। प्राथमिक स्तर के बालक 5-14 वर्ष के होतें हैं अतः इन पुस्तकालयों के कार्य बाकि पुस्तकालयों से भिन्न होती हैं। इनकी पाठक बहुत छोटे होते हैं इसलिए इनको विशेष सेवा देना होता हैं इन बच्चों को कहानी, कविता, पहेली आदि के माध्यम से पुस्तकों से परिचित कराया जाता हैं, एवं उनमे पढ़ने-लिखने में रुचि उत्पन्न की जाती हैं।

https://www.gapbhasha.org/

**प्राथमिक पुस्तकालयों के उद्धेश्य**

प्राथमिक पुस्तकालयों का प्रमुख उद्देश्य बालकों में सिखने एवं पढ़ने की रुचि उत्पन्न करना होता हैं, परन्तु इसके अतिरिक्त भी अन्य उद्देश्य हैं जिनको जानना आवश्यक हैं जो निम्न हैं -

- बालकों में सिखने एवं पढ़ने-लिखने की रुचि उत्पन्न करना।
- बालकों में पुस्तकों के प्रति प्रेम उत्पन्न करना।
- बालकों में स्व अध्ययन को बढ़ाना एवं उन्हें प्रशिक्षित करना।
- सूचना खोजने एवं उन्हें उपयोग कैसे किया जाए इसका दक्षता प्रदान करना।
- पुस्तकालय के प्रति बचपन से रूचि पैदा करना।
- बच्चों का समाजीकरण में सहयोग करना।
- बालकों की रचनात्मकता को पोषित करना और उन्हें जागृत करना।

**प्राथमिक पुस्तकालयों का कार्य**

प्राथमिक पुस्तकालय का मुख्य कार्य अपने संस्था के उद्देश्य की पूर्ति करना हैं, अपने संस्था के उद्देश्यों को पूर्ण करने के साथ साथ इसके अन्य प्रमुख कार्य भी हैं जो निम्न हैं -

- बच्चों की रुचि के अनुसार पुस्तकें प्रदान करना।
- पुस्तकालयों में विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करना।
- बच्चों को उचित मार्गदर्शन एवं स्वस्थ्य परामर्श देना।
- बच्चों में सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना
- बच्चों के शिक्षा में सहयोग प्रदान करना।
- बालकों की रचनात्मकता एवं कल्पनाशीलता को बढ़ाना एवं उन्हें प्रशिक्षित करना।
- सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को बढ़ाना ।

**प्राथमिक पुस्तकालयों का दायित्व**

प्राथमिक विद्यालय में कार्य कर रही पुस्तकालयों का यह दायित्व बनता हैं की वो बालकों के सम्पूर्ण विकास में मदद करें। बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए सकारात्मक वातावरण का माहौल बनाये एवं उनमे आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ाये। बच्चों के प्रत्येक समस्याओं का समाधान करें एवं उनमें वैज्ञानिक सोच का विकास करें। नन्हें बच्चें जब बाल पुस्तकालयों में प्रवेश करें तो उन्हें घर जैसे वातावरण में वो सब कुछ सिखने को मिले जो एक विद्यालय में सिखने को मिलता हैं। पुस्तकों से उनको भय न प्रेम हो, वो पुस्तकालय में आकर अधिक से अधिक समय बिताये ऐसा परिवेश का निर्माण करना पुस्तकालय का प्रथम दायित्व हैं। विद्यालय में प्रवेश करने वाले नए विद्यार्थियों को उन्मुखीकरण के माध्यम से पुस्तकालय का प्रभावपूर्ण परिचय करवाना भी पुस्तकालयाध्यक्ष का दायित्व होता हैं।

## निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं की प्राथमिक शिक्षा में पुस्तकालयों का महत्वपूर्ण स्थान हैं, विद्यालय के लक्ष्य एवं उद्धेश्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। बच्चों को भविष्य के लिए तैयार करता हैं, प्रारंभ से ही यह बालकों में पढ़ने की रुचि उत्पन्न करता हैं एवं पुस्तकों से मित्रता करवाता हैं जिनसे वो ज्ञान प्राप्त कर सही रास्ते पर आगे बढ़ें। एक सच्चें मित्र की जैसे पुस्तकालय उन्हें सदैव सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने को अभिप्रेरित करता हैं। उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श भी पुस्तकालय समय-समय पर विद्यार्थियों को प्रदान करता हैं, जिससे उनकी समस्या का समाधान हो सके। इस तरह हम कह सकते हैं की प्राथमिक शिक्षा में पुस्तकालय अत्यंत आवश्यक हैं।

## सन्दर्भ

[1] https://assets.vmou.ac.in/DLIS05.pdf

https://www.gapbhasha.org/

[2] https://ebooks.inflibnet.ac.in/lisp11/chapter/academic-library-system-objectives-and-functions-of-school-libraries/
[3] https://www.ameyaworldschool.in/7-reasons-why-school-libraries-are-essential-for-students/
[4] कौशिक, डॉ. दिनेश कुमार. पुस्तकालय और समाज. कल्पना प्रकाशन, पृष्ठ 69-74.

https://www.gapbhasha.org/